Examrace

एनसीईआरटी कक्षा7 इतिहास अध्याय 10: अठारहवीं शताब्दी राजनीतिक संरचनाएं यूट्यूब व्याख्यान हैंडआउट्स for Competitive Exams

Glide to success with Doorsteptutor material for CBSE/Class-7 : get questions, notes, tests, video lectures and more- for all subjects of CBSE/Class-7.

Get video tutorial on: Examrace Hindi Channel at YouTube

- 1765 तक: पूर्व भारत में अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया|
- 18 वीं शताब्दी के पहले भाग में नए राजनीतिक समूह बाहर आए (1707 से औरंगजेब की मृत्यु 1761 तक है जो पानीपत की तीसरी लड़ाई है)

मुघलोके नियम का पतन

- 17 वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ|
- औरंगजेब ने राज्य के सैन्य और आर्थिक संसाधनों को समाप्त कर दिया|
- बाद में मुघल मंसबदार की शक्तियों की जांच नहीं कर सका|
- अमीरोको गवर्नर के रूप में नियुक्त (सूबेदार) राजस्व और सैन्य प्रशासन के नियंत्रित कार्यालयों (दीवानी और फौजदारी)
- राजधानी में राजस्व की आवधिक छूट प्रांतों पर नियंत्रण मजबूत करने वाले राज्यपालों के साथ घट गई|
- किसान और ज़मीनदार के विद्रोहको समस्यामे जोड़ा गया – बढ़ते करों के कारण विद्रोह हुआ|
- प्रांतीय गवर्नरों के हाथों में राजनीतिक और आर्थिक अधिकार के क्रमिक स्थानांतरण को गिरफ्तार करने में असमर्थ|
- नदीर शाह ने 1739 में दिल्ली लूट लिया और बहुत सारी संपत्ति ले ली – रुपये 60 लाख, 1000 सोने के सिक्के, रुपये 1 करोड़ सोनेके बर्तन, रुपये 50 करोड़ जवाहरात और मोर सिंहासन – शाहजहांबाद का नया शहर टुकड़ो में बदल गया था।
- अहमद शाह अब्दली ने उत्तर भारत पर 1748 और 1761 के बीच पांच बार हमला किया|
- अन्य समूहों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा|
- ईरानियों और तुरानियों में विभाजित थे (तुर्की लोग)
- सबसे खराब मुगल अनुभव - फारुख सियार (1713 - 1719) और आलमगीर II की (1754 - 1759) हत्या कर दी गई थी, और दो अन्य अहमद शाह (1748 - 1754) और शाह आलम द्वितीय (1759 - 116) को उनके सरदारों ने अंधा कर दिया|

नए राज्यों का उद्भव

18 वीं सदी तक: मुघलोमे खंडित हुए:

- राज्य जो अवध, बंगाल और हैदराबाद जैसे पुराने मुगल प्रांत थे – शक्तिशाली और स्वतंत्र - सादत खान – जाट रैंक 6,000 (अवध) , मुर्शिद कुली खान – ज़ैट रैंक -7,000 (बंगाल) और असफ जहां - ज़ैट रैंक

-7,000 (हैदराबाद)

- जिन राज्यों ने मुगलों के तहत वतन जागीरों के रूप में काफी आजादी का आनंद लिया - कई राजपूत प्रधानताएं
- मराठों, सिखों और जाटों के नियंत्रण में राज्य था|

हैदराबाद

- निजाम-उल-मुल्क असफ जहां, हैदराबाद के संस्थापक - मुगल सम्राट फररुख सियार की अदालत में शक्तिशाली सदस्य – पहला अवध और बाद में दक्कन का गवर्नर था|
- उनका प्रशासन पर पूरा नियंत्रण था|
- उत्तर भारत से कुशल सैनिकों को लाया गया|
- उन्होंने मंसबदार नियुक्त किए और जागीर दिए|
- मुगलों ने निजाम द्वारा किए गए निर्णयों की पुष्टि की|
- पश्चिम में मराठों के खिलाफ संघर्ष में शामिल और पठार के स्वतंत्र तेलुगू योद्धा प्रमुख (नायक) के साथ थे|
- उनका उद्देश्य पूर्व में कोरोमंडल तट के समृद्ध वस्त्र क्षेत्रों को नियंत्रित करना है|

अवध

- बुरहान-उल-मुल्क सादत खान को 1722 में अवध के सूबेदार नियुक्त किया गया था और एक राज्य की स्थापना की गई थी – मुगल के टूटने के रूप में उभरा|
- उत्तर भारत और बंगाल के बीच गंगा मैदान और व्यापार मार्ग नियंत्रित किया|
- सूबेदारी के संयुक्त कार्यालय आयोजित, दीवानी और फौजदारी जो राजनीतिक, वित्तीय और सैन्य मामलों में हैं|
- मुगलों द्वारा नियुक्त किए गए जागीरदार (धोखाधड़ी को रोकने के लिए भूमिका)
- उन्होंने राजपूत ज़मीनदारियों और रोहिलखंड के अफगानों की उपजाऊ भूमि जब्त की|
- राज्य ऋण के लिए स्थानीय महाजनों पर निर्भर था|
- इसने बोलीदाताओं को कर एकत्र करने का अधिकार बेच दिया|
- “राजस्व किसान” (इजारदार) राज्य को एक निश्चित राशि का भुगतान करने पर सहमत हुए|

बंगाल

- मुर्शिद कुली खान को नाइब के रूप में नियुक्त किया गया था, प्रांत के गवर्नर के लिए सहायक – सभी शक्ति जब्त
- राजस्व प्रशासन का आदेश दिया – सख्तता के साथ नकद में एकत्रित, भुगतान करने में असमर्थ लोगों को भूमि बेचने के लिए कहा गया था
- सभी मुगल जगीरदारों को उड़ीसा में स्थानांतरित कर दिया और बंगाल के राजस्व के बड़े पुनर्मूल्यांकन का आदेश दिया|

- अलीवार्डी खान के तहत – जगत सेठ का बैंकिंग हाउस समृद्ध हो गया|

अवध, हैदराबाद और बंगाल के तहत तीन चीजें सामान्य हैं

- मुगल साम्राज्य के महानतमों द्वारा स्थापित राज्य - जागीरदारी पद्धति
- उन्होंने कर संग्रह के लिए राजस्व किसानों से अनुबंध किया – इजारेदारी
- बैंकरों और व्यापारियों के साथ संबंध जिन्होंने राजस्व किसानों को पैसा दिया|

राजपूतों के वतन जागीर

- एम्बर और जोधपुर के राजाओं – वतन जागीर (स्वराज्य)
- 18 वीं सदी: शासकों ने आसपास के क्षेत्रों पर नियंत्रण बढ़ाया|
- जोधपुर के शासक अजित सिंह राजनीति में शामिल थे|
- प्रभावशाली राजपूत परिवारों ने गुजरात और मालवा के समृद्ध प्रांतों की सूबेदारी का दावा किया।
- जोधपुर के राजा अजीत सिंह - गुजरात के गवर्नर और एम्बर के सवाई राजा जय सिंह मालवा के गवर्नर थे 1713 में सम्राट जहांदर शाह ने कार्यालयों का नवीकरण किया था|
- जोधपुर ने नागौर पर विजय प्राप्त की|
- एम्बर ने बुंदी जब्त की|
- राजा जय सिंह ने जयपुर में नई राजधानी की स्थापना की और 1722 में आगरा के सूबेदारको दिया गया|
- 1740 के दशक से राजस्थान में मराठा अभियान शुरू हुआ|

आजादी हासिल करना - सिख

- गुरु गोबिंद सिंह ने 1699 में खालसा के पहले और बाद में राजपूतों और मुगलों के खिलाफ लड़ा|
- 1708 के बाद, खलसा बांदा बहादुर नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह में उठे – सतलुज और यमुना के बीचमे शासन स्थापित किया – नानक और गुरु गोबिंद सिंह के नाम पर हटाए गए सिक्के- 1715 में बांदा बहादुर पर कब्जा कर लिया गया और 1716 में निष्पादित किया गया।
- सिखों ने खुद को जठों नामक बैंड के तहत व्यवस्थित किया, और बादमे मिसलिस – संयुक्त सेना दल खालसा थी|
- राखी पेश की गई थी- उपज के 20 % कर के भुगतान पर किसानों को सुरक्षा प्रदान की|
- खालसा का शासन करना था - राज करगा खलसा ने 1765 में बांदा बहादुर के तहत एक ही शिलालेख के साथ अपने सिक्के पेश किए|
- मुगलों और बाद में अहमद शाह अब्दली ने मुगलों से पंजाब और सरकार सरहिंद को जब्त कर लिया|
- 18 वीं सदी: सिंधु से जमुना तक विस्तारित
- महाराजा रणजीत सिंह: इन समूहों को दोबारा जोड़ दिया और 17 99 में लाहौर में अपनी राजधानी की स्थापना की|

आजादी हासिल करना - मराठा

- शिवाजी के साथ शक्तिशाली योद्धा थे| (देशमुख)
- ज्यादा गतिशील, किसान चरवाहे (कुनबी) – मराठाका पृष्ठ वंश
- शिवाजी के बाद - चितपावन ब्राह्मणों के परिवार ने शिवाजी के उत्तराधिकारी पेशवा के रूप में सेवा दी (या प्रधान मंत्री) . पूना मराठा साम्राज्य की राजधानी बन गई।
- पेशवा – अच्छा सैन्य संगठन
- मालवा और गुजरात को 1720 तक मुगलों से जब्त कर लिया गया था
- 1730 तक, मराठों को पूरे डेक्कन 1730 तक, मराठों को पूरे डेक्कन प्रायद्वीप के अधिग्रहण के रूप में पहचाना गया था।के अधिग्रहण के रूप में पहचाना गया था। उन्हें पूरे क्षेत्र में चौथ और सरदेशमुखी लाने का अधिकार था|
- 1737 में दिल्ली पर छापा मारा गया और राजस्थान में और उत्तर में पंजाब; पूर्व में बंगाल और उड़ीसा में; और कर्नाटक और दक्षिण में तमिल और तेलुगू देशों में फैल गया|
- अन्य मराठों की ओर शत्रु हो गए और 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई के दौरान मराठों का समर्थन नहीं किया|
- कृषि को प्रोत्साहित किया गया और व्यापार को पुनर्जीवित किया गया - ग्वालियर के सिंधिया जैसे मराठा प्रमुख (सरदार) , बरोडा के गायकवाड़ और नागपुर के भोंसले ने शक्तिशाली सेनाएं स्थापित की|
- मालवा: उज्जैन सिंधिया के संरक्षण के तहत विस्तारित हुआ और होलकर के तहत इंदौर - ये वाणिज्यिक केंद्रों के रूप में कार्यरत थे|
- मराठाकी राजधानी पूनामें चंदेरी से रेशम पाया गया था, बुरहानपुर में आगरा और सूरत के बीच व्यापार था, दक्षिण में पुणे और नागपुर और पूर्व में लखनऊ और इलाहाबाद में विस्तार हुआ|

आजादी हासिल करना - जाट

- 17 वीं -18 वीं शताब्दी के दौरान शक्ति सम्मिलित हुई|
- चुरामैन (नेता) – दिल्ली के पश्चिम क्षेत्रों और दिल्ली और आगरा के बिच नियंत्रित था|
- वे आगरा शहर के वास्तविक संरक्षक बन गए|
- पानीपत और बल्लभढ़ – व्यापार केंद्र थे|
- सूरज माल – भरतपुर के राजा (मजबूत शासक) – नादिर शाह पर आक्रमण पर भरतपुर में कई लोगों ने शरण ली|
- जवाहिर शाह के पास 30,000 सैनिक थे और मुगलों से लड़ने के लिए 20,000 मराठा और 15,000 सिख सैनिकों को नियुक्त किया था|
- भरतपुर का किला: प्रकृति में पारंपरिक
- दिग किल्ला: एम्बर और आगरा में देखे गए शैक्षिक संयोजन वाले विस्तृत बगीचे महल (शाहजहां से विचार आया)

फ्रेंच क्रांति

- 18 वीं सदी: आम आदमी सरकारी मामलों में भाग नहीं लेता था|
- मध्य वर्ग, किसान और कारीगर, पादरी और महानता के विशेष अधिकारों के खिलाफ लड़े|
- मानते थे कि किसी समूह को जन्म के आधार पर विशेषाधिकार नहीं होना चाहिए|
- सामाजिक स्थिति योग्यता पर आधारित होनी चाहिए|
- सभी के लिए समान कानून और अवसर का विचार|
- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से नागरिकता, राष्ट्र-राज्य और लोकतांत्रिक अधिकारों के विचार भारत में जड़ गए|

✍ Manishika

Developed by: Mindsprite Solutions